ORIGINAL RESEARCH PAPER

History

KEY WORDS:

सुशासन व लोककल्याण हेतु कामंदकीय नीतिसार : वर्तमान प्रासंगिकता

रेणु चौधरी शोधार्थी दर्शनशास्त्र विभाग राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर।

सर्वप्रथम वैदिककाल में सुशासन की स्पष्ट झलक दिखाई पड़ती है। इस काल में राजा ग्रामणियों द्वारा प्रत्यक्षतः निर्वाचित तथा सभा, समिति व विदथ जैसी संस्थाओं से नियंत्रित था।1 सारतः राजा निरंकुश न होकर जनहित व शासकीय कर्तव्यों से प्रेरित था।

कालांतर में व्यक्तिगत संपत्ति के अभ्युदय के फलस्वरूप विभिन्न वर्गों का स्वरूप उभरा जिससे समतावादी समाज की नैसर्गिक प्रकृति को आघात पहुंचा। इसी के चलते कौटिल्य ने शक्तिशाली व संप्रभु राजा को आवश्यक माना। हालांकि इसका स्वरूप कल्याणकारी था व जनहित से विमुख होने पर जनत इसे अपदस्थ कर सकती थी।

उपर्युक्त कल्याणकारी विचारों को आधार बनाकर ही कामंदक ने अपने मूल ग्रंथ 'कामंदकीय नीतिसार' की रचना की। गुप्तकाल में रचित इस ग्रंथ की वर्तमान उपादेयता के संबंध में कोई दोराय नहीं है क्योंकि इनके द्वारा वर्णित राजतंत्रात्मक व्यवस्था अपने स्वरूप में लोकतांत्रिक प्रकृति की ही है। इसमें सुशासन, जनहित, सामाजिक न्याय तथा समाज की स्थापना आदि को मूल उद्देश्यों के रूप में स्वीकार किया गया है। इसीलिए इनके विचार समसामयिक परिस्थितियों में भी मौलिक समाधान प्रस्तुत करते है।

कामंदक ने सुयोग्य मंत्रियों की आवश्यकता को स्वीकार किया है जो कि सुशासन में मूलभूत निर्धारक की भूमिका निभाते है। अन्यथा, दृष्टात्मक प्रवृत्ति के मंत्री राजा का भक्षण व समाज में अव्यवस्था को पोषित करेंगे। अतः राजा को अच्छे मंत्रियों का संग्रह करना चाहिए तथा उनमें शालीनता, पवित्रता, शूरता, दण्डनीति का यथोचित उपयोग आदि की योग्यता को सुनिश्चित करना चाहिए।2 वर्तमान में राजनीति में बढ़ते अपराधीकरण व सामाजिक क्षेत्र में नैतिक मूल्यों के ह्रास के उपशमन हेतु कामंदक के विचार प्रासंगिक है।

कामंदक ने राजा हेतु विभिन्न गुणों का निर्धारण किया है यथा शास्त्रज्ञान कुलीनता, उदारता, शौर्य, न्यायप्रियता, सत्यवादिता आदि। साथ ही मंत्रियों व अध्यक्षों की नियुक्ति में भी राजा को इन गुणों का सुनिश्चयन करना चाहिए ताकि राजा प्रजा को '5 भयों' से मुक्ति दिला सके। ये 5 भय हैं– शत्रु आक्रमण का भय, चोरों का भय, राजा, राजवल्लभ व राजकीय कर्मचारियों के भ्रष्ट आचरण से भय। इनमें से किसी भी भय का प्रभाव यदि बढ़ता है तो समाज में अस्थिरता व विघटनकारी तत्वों को बढ़ावा मिलता है। अतः वर्तमान में बाह्य आक्रमण से रक्षा, आंतरिक शांति व स्थायित्व की सुनिश्चितता, सायबर फ्राड, प्रशासन में भ्रष्टाचार आदि के निराकरण हेतु उपर्युक्त गुणों से युक्त प्रशासकों की आवश्यकता है।

राजा द्वारा सामाजिक नियमों के अनुरूप विधि निर्माण तथा उनके क्रियान्वयन हेतु दण्ड व्यवस्था का सुनिश्चियन प्रमुख दायित्व माना हैं। न्याय को राजा का मुख्य धर्म माना गया।3 राजा सर्वोच्च न्यायाधिकारी के रूप में मंत्रियों व पुरोहितों के परामर्श से दण्ड विधान तय करता था।4 कामंदकीय नीतिसार में राजा को आग्रह है कि वह अपराधानुसार उचित दण्ड का विधान करे जो आवश्यकता से न तो अधिक तीक्ष्ण और न ही अधिक शिथिल हो, अपितु संतुलित अवस्था में हो। दण्ड व्यवस्था ऐसी होनी चाहिए जो विधिवत न्याय पर आधारित हो; जो धर्म, अर्थ व काम की वृद्धि में सहायक हो। अन्यथा प्रजा में राजा के प्रति विरक्ति व तिरस्कार की भावना उत्पन्न होती है जो राज्य के स्थायित्व के प्रतिकूल है। न्यायिक व्यवस्था में परिवारवाद, वंशवाद आदि का स्पष्ट विरोध कामंदक ने किया है। इन नियमों से विचलन होने पर राज्य में क्रांति की संभावनाएं पैदा हो सकती है।

कामंदकीय नीतिसार में राजा को कर ग्रहण करने का अधिकार प्राप्त है जो यथासमय व यथास्थान होना चाहिए। इनके अनुसार कर राजा का वेतन है जो प्रजा की रक्षा व लोककल्याणकारी कार्यों के सुनिश्चयन हेतु राजा को प्राप्त होता है। कामंदक के शब्दों में –

''राजा सूर्य के समान है जो समुद्र से जल सोखकर पुनः वर्षा करता है।''5

इस हेतु कर ग्रहण करने के 8 स्रोत भी इन्होंने बताए यथा कृषि पर कर, जल व स्थल मार्ग पर कर, खानों पर कर, धनिकों से धन उगाही आदि।

कामंदक ने मजबूत सैन्य व्यवस्था को भी सुशासन हेतु अत्यावश्यक माना है क्योंकि इससे बाह्य आक्रमण के भय से मुक्ति, सीमा सुरक्षा सीमा विस्तार, आर्थिक समृद्धि व जीवन स्तर में विकास सुनिश्चित होता है। युद्ध करने हेतु राजा को आवश्यकतानुसार 3 प्रकार की शक्तियों का प्रयोग करना चाहिए जो निम्न है–

1. मंत्र शक्ति – कूटनीति का उचित प्रयोग
2. प्रभु शक्ति – कोष व सैन्य बल
3. उत्साह शक्ति – राजा का शौर्य बल।6

वर्तमान वैश्विक व्यवस्था में भी मजबूत आर्थिक स्थिति, सशक्त सैन्य बल, सफल कूटनीति तथा राष्ट्रीय हितों से प्रेरित नेता को वैश्विक नेतृत्वकर्त्ता होने के लिए आवश्यक माना है। इस हेतु राजनीतिक दार्शनिक के रूप में कामंदक दर्शनशास्त्र समेत विभिन्न विषयों के मार्गदर्शक रहे हैं। वैश्वीकरण के दौर में अंतर्विषयक अध्ययनों के बढ़ते प्रचलन तथा दर्शनशास्त्र द्वारा सामाजिक राजनीतिक क्षेत्र को आत्मसात करने के क्रम में प्राचीन दार्शनिकों का सुशासन की स्थापना में योगदान कमतर नहीं है। अतः कामंदक कृत 'कामंदकीय नीतिसार' वर्तमान में नैतिक मूल्यों के ह्रास, भ्रष्टाचार, उपभोक्तावादी संस्कृति आदि का उपशमन करने तथा सुशासन, जनकल्याण व नैतिक समाज की स्थापना करने में महत्वपूर्ण व प्रासंगिक प्रतीत होती है।

संदर्भ

1. ऋग्वेद 40/173/9
2. कामंदक, ''कामंदकीय नीतिसार'', डॉ. दिनेश कुमार गर्ग (संपादक), सम्पूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी।
3. अल्टेकर, डॉ. ए.एस., ''प्राचीन भारतीय शासन पद्धति'', भारती भण्डार, लीडर प्रेस, प्रयाग।
4. शुक्राचार्य, ''शुक्रनीतिसार'', डॉ. जगदीश प्रसाद मिश्र (अनुवादक), चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी,
5. कामंदक, ''कामंदकीय नीतिसार'', ज्वाला प्रसाद मिश्र (संपादक), बम्बई।
6. कामंदक, ''कामंदकीय नीतिसार'' ज्वाला प्रसाद मिश्र (संपादक), बम्बई।